Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# पत्रकारिता में स्त्री विमर्श: मुख्यधारा मीडिया और महिला आवाज़

**डॉ. हुसन सिंह सोलंकी***

* सहायक प्राधयापक (हिन्दी) भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू, इंदौर (म.प्र.) भारत

**शोध सारांश –** मुख्यधारा की पत्रकारिता समाज के विचारों, धारणाओं और विमर्शों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किंतु जब विषय स्त्री विमर्श का हो, तो यह अनिवार्य हो जाता है कि हम यह जानें कि क्या महिला मुद्दे, स्वर, और दृष्टिकोण पत्रकारिता की प्राथमिकताओं में हैं या नहीं। यह शोधपत्र पत्रकारिता में स्त्री की उपस्थिति, महिला पत्रकारों की भागीदारी, और महिला विषयों की प्रस्तुति की भूमिका से प्रेरित है। अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि यद्यपि महिला पत्रकारिता में धीरे-धीरे सशक्त भूमिका में आ रही हैं, तथापि मीडिया की रिपोर्टिंग में महिलाओं को आज भी अक्सर एक पीड़िता, उपभोक्ता वस्तु या शोपीस के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके विपरीत महिलाओं के नेतृत्व, बौद्धिक योगदान, और सामुदायिक संघर्षों को कम प्राथमिकता दी जाती है। यह शोधपत्र मीडिया में स्त्री छवि के सशक्तिकरण, महिला-संबंधी मुद्दों को समाचारों की मुख्यधारा में लाने, और पत्रकारिता में जेंडर संतुलन सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल देता है। इसमें हिंदी समाचार पत्रों और डिजिटल मीडिया प्लेटफार्मों की सामग्री का विश्लेषण कर यह दर्शाया गया है कि पत्रकारिता की भाषा, संदर्भ और दृष्टिकोण में संवेदनशीलता लाने की नितांत आवश्यकता है। यह अध्ययन मीडिया, समाज और स्त्री चेतना के त्रिकोण को केंद्र में रखकर पत्रकारिता में स्त्री विमर्श की सामर्थ्य और सीमाओं को उजागर करता है।

**शब्द कुंजी –**स्त्री विमर्श, पत्रकारिता, मुख्यधारा मीडिया, महिला पत्रकार, जेंडर प्रतिनिधित्व, मीडिया विश्लेषण, महिला मुद्दे, संवेदनशील रिपोर्टिंग, लैंगिक असमानता, महिला छवि।

**प्रस्तावना –** पत्रकारिता को समाज का चौथा स्तंभ माना जाता है, जिसकी भूमिका केवल सूचना देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जनमत निर्माण, सामाजिक चेतना के प्रसार और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। परंतु जब हम पत्रकारिता के भीतर स्त्री विमर्श की बात करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि महिलाओं की उपस्थिति और उनकी आवाज़ें इस क्षेत्र में अभी भी पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व नहीं पा सकी हैं। भारत जैसे पितृसत्तात्मक समाज में जहाँ महिलाएँ सदियों से दमन, असमानता और उपेक्षा का शिकार रही हैं, वहाँ पत्रकारिता में उनके मुद्दों का सम्यक और संवेदनशील चित्रण अत्यंत आवश्यक है। यह भूमिका केवल महिला पत्रकारों की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उस दृष्टिकोण को भी बदलने की ज़रूरत है जिससे समाचारों को प्रस्तुत किया जाता है। मीडिया जब तक स्त्री को केवल पीड़िता, शोपीस या उपभोक्ता वस्तु के रूप में प्रस्तुत करता रहेगा, तब तक समाज की सोच में परिवर्तन संभव नहीं। इसलिए यह अध्ययन पत्रकारिता में स्त्री विमर्श की उपस्थिति, उसकी प्रकृति, सीमाएँ और संभावनाओं की गहन पड़ताल करता है। मुख्यधारा मीडिया में महिलाओं के मुद्दों की प्राथमिकता, महिला पत्रकारों की भूमिका और पत्रकारिता की भाषा में लैंगिक दृष्टिकोण की उपस्थिति इस शोध का केंद्रीय विषय है।

**प्रमुख परिभाषाएँ**

**पत्रकारिता:**'पत्रकारिता केवल घटनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि सत्य की खोज, सामाजिक उत्तरदायित्व और जनचेतना का विस्तार है।' (प्रभाकर, 2018)पत्रकारिता एक ऐसी प्रक्रिया है जो सूचना, विश्लेषण और विचारों के माध्यम से जनमानस को प्रभावित करती है और लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करती है। (मेन्चर, 2011)

**स्त्री विमर्श :**'स्त्री विमर्श सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक व्यवस्था में नारी की स्थिति को पुनर्परिभाषित करने का प्रयास है।' (कुमारी, 2019)टोंग (2009) के अनुसार, नारीवादी सिद्धांत लिंग, शक्ति और उत्पीड़न की प्रकृति का विश्लेषण करके लैंगिक असमानता को समझने और संबोधित करने का प्रयास करता है।

**मुख्यधारा मीडिया :**'मुख्यधारा मीडिया वे संचार साधान हैं जिनका समाज में सूचना के प्रवाह और जनमत निर्माण पर गहरा प्रभाव होता है।' (शुक्ला, 2020)मुख्यधारा मीडिया से तात्पर्य बड़े जन समाचार मीडिया से है जो व्यापक दर्शकों को प्रभावित करते हैं और सूचना के पारंपरिक स्रोत माने जाते हैं। (मैकक्वेल, 2010)

**महिला आवाज़:**'महिला आवाज़ का तात्पर्य उन अनुभवों, दृष्टिकोणों और भावनाओं से है, जो महिलाओं द्वारा स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त किए जाते हैं।' (राय, 2021)गिल (2007) के अनुसार, महिलाओं की आवाज़, सार्वजनिक चर्चा में महिलाओं के दृष्टिकोण और पहचान का प्रतिनिधित्व और अभिव्यक्ति है।

**लैंगिक प्रतिनिधित्व :**'लैंगिक प्रतिनिधित्व वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मीडिया में पुरुषों और महिलाओं की उपस्थिति, भूमिका और छवि गढ़ी जाती है।' (बैनर्जी, 2017)मीडिया में लिंग प्रतिनिधित्व से तात्पर्य है कि विभिन्न लिंगों को कैसे चित्रित किया जाता है और ऐसे चित्रणों की आवृत्ति, संदर्भ और रूपरेखा क्या है। (बायर्ली और रॉस, 2006)

**शोध उद्देश्य:**

1. मुख्यधारा पत्रकारिता में महिलाओं के मुद्दों की प्रस्तुति का अध्ययन करना।

2. स्त्री विमर्श के दृष्टिकोण से मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. मीडिया संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी और उनके दृष्टिकोण की मौजूदगी का मूल्यांकन करना।

**शोध पद्धति –** इस शोधपत्र में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का समन्वित रूप अपनाया गया है, जिससे पत्रकारिता में स्त्री विमर्श की उपस्थिति, अभिव्यक्ति तथा प्रभावशीलता का गहराई से परीक्षण किया जा सके। अध्ययन में मुख्य रूप से हिंदी मुख्यधारा मीडिया – जैसे दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला एवं जनसत्ता के समाचार पत्रों एवं उनके डिजिटल संस्करणों में 2020 से 2025 के मध्य प्रकाशित महिला–संबंधी समाचार, संपादकीय, फीचर लेख तथा विशेष संवादों को आधार बनाया गया। इसके साथ ही महिला पत्रकारों द्वारा लिखे गए प्रमुख लेखों और साक्षात्कारों का भी गुणात्मक विश्लेषण किया गया, ताकि मीडिया में महिला दृष्टिकोण की उपस्थिति को समझा जा सके।

समंक संग्रह हेतु द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया, जिनमें मीडिया लेखों, रिपोर्टों, समाचारों, शोध–पत्रों एवं जर्नल लेखों का संग्रह और विश्लेषण सम्मिलित था। शोध में विषयवस्तु विश्लेषण तकनीक का प्रयोग कर यह पहचाना गया कि महिला–संबंधी मुद्दे किस प्रकार से प्रस्तुत किए जाते हैं –क्या वे केवल घटनात्मक होते हैं या उनमें संरचनात्मक सोच, समाधान और संवेदनशीलता भी दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त, कुछ प्रमुख महिला पत्रकारों के लेखों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह भी देखा गया कि महिला पत्रकारों की लेखनी में स्त्री विमर्श की स्पष्टता और विविधता किस प्रकार दृष्टिगोचर होती है।

शोध की प्रक्रिया में मीडिया प्रस्तुति की भाषा, संदर्भ, शीर्षक की प्रवृत्ति, चित्रण की शैली और घटनाओं के चुनाव जैसे पहलुओं को गहराई से परखा गया, ताकि यह जाना जा सके कि क्या मीडिया स्त्री को केवल 'समाचार की विषयवस्तु' मानता है या उसे एक 'चिंतक, कर्ता और समाज निर्माता' के रूप में भी स्थान देता है। इस पद्धति द्वारा यह स्थापित करने का प्रयास किया गया कि पत्रकारिता में स्त्री विमर्श की स्थिति केवल उपस्थिति मात्र नहीं, बल्कि उसके प्रभाव और दिशा का भी सूचक है।

**मुख्यधारा मीडिया में स्त्री की छवि –** मुख्यधारा मीडिया में स्त्री की छवि बहुधा विरोधाभासी, असंतुलित और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से निर्मित पाई जाती है। जहाँ एक ओर मीडिया स्त्री सशक्तिकरण, नेतृत्व और उपलब्धियों की कहानियाँ प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरी ओर वह अक्सर स्त्री को एक उपभोक्ता वस्तु, सौंदर्य का प्रतीक या पीड़िता के रूप में भी प्रस्तुत करता है। यह दोहरापन न केवल स्त्री विमर्श के संदर्भ को सीमित करता है, बल्कि समाज की सोच को भी एक विशेष दिशा में मोड़ देता है।

शोध से स्पष्ट होता है कि अधिकांश समाचारों में महिला से संबंधित रिपोर्टें 'घटनात्मक' होती हैं – जैसे दुष्कर्म, हिंसा, घरेलू उत्पीड़न आदि, जबकि संरचनात्मक और नीतिगत पहलुओं पर ध्यान अपेक्षाकृत कम दिया जाता है (बायेर्ली एंड रॉस, 2006)। उदाहरणस्वरूप, महिला नेतृत्व, नीति निर्माण में उनकी भागीदारी, ग्रामीण महिलाओं की भूमिका या शिक्षा व स्वास्थ्य जैसे विषयों को केवल 'विशेष अवसरों' या 'महिला दिवस' जैसे प्रसंगों तक सीमित कर दिया जाता है (गिल, 2007)। इससे महिला विषयों की प्रस्तुति अस्थायी, अवसरजन्य और कभी–कभी सहानुभूतिपरक हो जाती है, न कि सशक्तिकरण की दृष्टि से समावेशी।

महिला छवि का एक और आयाम 'विज्ञापन पत्रकारिता' से जुड़ा है, जहाँ स्त्री को एक आकर्षक वस्तु या बिकाऊ चेहरा बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। इन छवियों में उसकी 'इच्छा', 'विचार' और 'बौद्धिकता' को हाशिये पर डाल दिया जाता है। बैनर्जी (2017) के अनुसार, मीडिया में स्त्री की यह छवि, उसके वास्तविक सामाजिक संघर्षों को ढक देती है और उसे एक सतही संदर्भ में सीमित कर देती है।

हिंदी पत्रकारिता भी इससे अछूती नहीं है। अनेक समाचार पत्रों की प्रस्तुति में भाषा में व्यंग्यात्मकता, शीर्षकों में सनसनीखेज़ी और महिला पीड़िताओं के प्रति असंवेदनशील रुख देखा गया है (कुमारी, 2019)। स्त्री को केवल 'घटना' बनाकर प्रस्तुत करना, उसके जीवन की जटिलताओं, सामाजिक दबावों और संघर्षों को दरकिनार कर देता है। वहीं दूसरी ओर, कुछ महिला पत्रकारों और वैकल्पिक मीडिया मंचों (जैसे खबर लहरिया, भारत में नारीवाद) ने स्त्री मुद्दों को जमीनी दृष्टिकोण से उठाने का प्रयास किया है, जो मीडिया में सकारात्मक बदलाव की दिशा है (राय, 2021)।

अत: यह कहा जा सकता है कि मुख्यधारा मीडिया में स्त्री की छवि अभी भी संघर्षरत है एक ओर परंपरागत रूढ़ियों से घिरी हुई, और दूसरी ओर परिवर्तनकारी चेतना के प्रयासों से प्रभावित। जब तक मीडिया में स्त्री की छवि सहभागी, निर्माता, विचारक और निर्णायक के रूप में नहीं उभरती, तब तक स्त्री विमर्श की पत्रकारिता में पूर्णता नहीं आ सकती।

**महिला पत्रकारों की भूमिका –** पत्रकारिता के क्षेत्र में महिला पत्रकारों की भूमिका केवल सूचना के संप्रेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि वे मीडिया की भाषा, दृष्टिकोण और संवेदनशीलता को नया आकार देने का कार्य कर रही हैं। परंपरागत रूप से पुरुष–प्रधान इस पेशे में महिलाओं की उपस्थिति एक सशक्त सांस्कृतिक बदलाव का संकेत है, जो मीडिया की विषयवस्तु और प्रस्तुति में विविधता और लैंगिक संतुलन को प्रेरित करती है।

महिला पत्रकार न केवल महिला मुद्दों को अधिक गहराई और संवेदनशीलता से उठाती हैं, बल्कि वे उन विषयों को भी सामने लाती हैं जिन्हें मुख्यधारा मीडिया प्राय: उपेक्षित करता रहा है –जैसे घरेलू श्रमिकों की स्थिति, यौन हिंसा पर सामाजिक चुप्पी, या ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी संकट (शर्मा, 2020)। उनके लेखन और रिपोर्टिंग की शैली में सामाजिक जटिलताओं की बेहतर समझ, भावनात्मक सूक्ष्मता और वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रकट होता है।

बायर्ली और रॉस (2006) के अनुसार, महिला पत्रकारों की उपस्थिति मीडिया संगठनों में निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया को अधिक लोकतांत्रिक बनाती है, जिससे स्त्री–केंद्रित विषयों को स्थान और गंभीरता मिलती है। यद्यपि उच्च पदों पर महिलाओं की संख्या अब भी सीमित है, फिर भी वे संपादन, प्रोडक्शन, ग्राउंड रिपोर्टिंग और खोजी पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

भारत में राणा अय्यूब, निधि राजदान, बर्खा दत्त, और अनुराधा भसीन जैसी महिला पत्रकारों ने न केवल स्त्री विमर्श, बल्कि राजनीतिक विश्लेषण, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय जैसे विषयों को भी निर्भीकता से उठाया है। भारत में नारीवाद, खबर लहरिया, मोजो स्टोरी जैसे वैकल्पिक मीडिया प्लेटफॉर्म महिला पत्रकारों द्वारा संचालित हैं, जो जमीनी स्तर की पत्रकारिता को स्त्री दृष्टिकोण से समृद्ध कर रहे हैं (राय, 2021)।

हालांकि चुनौतियाँ अब भी विद्यमान हैं – जैसे कार्यस्थलों पर लैंगिक भेदभाव, यौन उत्पीड़न, फील्ड रिपोर्टिंग में असुरक्षा और डिजिटल माध्यमों में ट्रोलिंग – परंतु महिला पत्रकार इन बाधाओं के बावजूद मीडिया के मानकों

को नई दिशा दे रही हैं। वे पत्रकारिता को केवल 'सूचना' तक सीमित नहीं रहने देतीं, बल्कि उसमें मानवीय संवेदना, न्याय की माँग और सामाजिक उत्तरदायित्व का समावेश करती हैं (गिल, 2007)। इस प्रकार महिला पत्रकारों की भूमिका, केवल प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं, बल्कि संरचना, दृष्टिकोण और संवेदनशील विमर्श के सशक्त आधार के रूप में विकसित होती जा रही है।

**सामाजिक प्रभाव और सीमाएँ –** पत्रकारिता में स्त्री विमर्श की उपस्थिति का समाज पर बहुआयामी प्रभाव पड़ा है। महिला पत्रकारों द्वारा उठाए गए विषयों, दृष्टिकोणों और सवालों ने पारंपरिक सामाजिक सोच को चुनौती दी है और एक अधिक समावेशी व संवेदनशील संवाद की नींव रखी है। मुख्यधारा मीडिया में स्त्रियों की आवाज़ का प्रसार होने से लैंगिक समानता की अवधारणा को व्यापकता मिली है। साथ ही, घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न, मासिक धर्म स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे विषय अब केवल 'महिला मुद्दे' न रहकर सामाजिक सुधार का विषय बन गए हैं (सेन, 2014)।

इस संवाद ने ग्रामीण और शहरी, दोनों ही क्षेत्रों में महिलाओं की आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा दिया है। वैकल्पिक मीडिया मंचों तथा सोशल मीडिया की सहायता से अनेक युवा लड़कियाँ और महिलाएँ अब अपने अनुभवों को स्वर दे रही हैं, जो पहले पारिवारिक, सामाजिक या सांस्कृतिक दबावों के कारण मौन थीं (राय, 2021)। इससे समाज में महिला चेतना का स्तर ऊँचा हुआ है और संवाद का दायरा भी विस्तृत हुआ है।

किन्तु, इसके साथ कुछ महत्वपूर्ण सीमाएँ भी देखी जाती हैं। पहला – मीडिया का केंद्रीकरण और कॉर्पोरेट स्वार्थों के कारण महिला-संबंधी मुद्दों का प्रस्तुतीकरण कभी-कभी केवल 'ब्रांडिंग' या 'विज्ञापन रणनीति' के अंतर्गत किया जाता है (गिल, 2007)। दूसरा – स्त्री मुद्दों की रिपोर्टिंग अधिकतर 'दुखांत' या 'पीड़ित' फ्रेम में होती है, जिससे समाज में महिलाओं की छवि एक असहाय प्राणी की बनती है, न कि एक सक्रिय, सक्षम परिवर्तनकर्ता की (बनर्जी, 2017)।

तीसरा – ग्रामीण और दलित महिलाओं की आवाज़ अब भी मुख्यधारा मीडिया में गौण है। खबर लहरिया और मोजो स्टोरी जैसे मंच इनकी आवाज़ें उठाते हैं, किंतु उनकी पहुँच और प्रभावशीलता अब भी सीमित हैं। चौथा – महिला पत्रकारों को कार्यस्थल पर असमान वेतन, पदोन्नति में पक्षपात, फील्ड रिपोर्टिंग में असुरक्षा और डिजिटल ट्रोलिंग जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है (शर्मा, 2020)।

अत: जहाँ एक ओर पत्रकारिता में स्त्री विमर्श ने सामाजिक विमर्श को व्यापक और संवेदनशील बनाया है, वहीं यह आवश्यक है कि इस विमर्श को केवल 'सहायता' या 'दया' की दृष्टि से न देखा जाए, बल्कि 'साझेदारी', 'स्वर-समता' और 'निर्णय निर्माण' के स्तर पर स्थान दिया जाए।

**निष्कर्ष –** पत्रकारिता में स्त्री विमर्श की उपस्थिति न केवल एक वैचारिक हस्तक्षेप है, बल्कि सामाजिक चेतना के निर्माण की एक सक्रिय प्रक्रिया भी है। वर्तमान शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि मुख्यधारा मीडिया में स्त्रियों की छवि, भूमिका और प्रतिनिधित्व अब पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़ रहा है। यद्यपि स्त्रियों को अभी भी अक्सर 'पीड़िता' या 'प्रतीक' के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन महिला पत्रकारों के लेखन, वैकल्पिक मीडिया मंचों की सक्रियता, और डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने स्त्री स्वर को एक नई ऊर्जा प्रदान की है।

इस शोध के विश्लेषण से यह भी प्रमाणित होता है कि महिला पत्रकार न केवल स्त्री मुद्दों को प्रमुखता से उठा रही हैं, बल्कि मीडिया में दृष्टिकोण, संवेदना और नैतिकता के स्वरूप को भी पुनर्परिभाषित कर रही हैं। वे रिपोर्टिंग में केवल तथ्य प्रस्तुत नहीं कर रहीं, बल्कि प्रश्न उठा रही हैं, समाज को विमर्श में सम्मिलित कर रही हैं और संवाद की दिशा तय कर रही हैं।

अंततः, जब तक मीडिया में स्त्री को केवल विषय नहीं, विचार, द्रष्टा और निर्णायक के रूप में स्थान नहीं मिलेगा, तब तक स्त्री विमर्श अधूरा रहेगा। अत: पत्रकारिता को चाहिए कि वह स्त्री विषयों को मात्र 'वर्गीकृत समाचार' के रूप में नहीं, बल्कि समाज के परिवर्तनशील विमर्श का केंद्रीय तत्व माने। यही पत्रकारिता की भूमिका को अधिक उत्तरदायी, समावेशी और मानवीय बनाएगा।

**सुझाव :**

1. संपादकीय बोर्ड में महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाया जाए।
2. महिला पत्रकारों को निर्णय-निर्माण की भूमिका दी जाए।
3. महिला-संबंधी मुद्दों पर गहराई से रिपोर्टिंग के लिए विशेष संवाददाता नियुक्त किए जाएं।
4. मीडिया शिक्षण संस्थानों में लैंगिक संवेदनशीलता को पाठ्यक्रम में जोड़ा जाए।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. Byerly, C. M., & Ross, K. (2006). *Women and Media: A Critical Introduction*. Malden, MA: Blackwell Publishing.
2. Gill, R. (2007). *Gender and the Media*. Cambridge: Polity Press.
3. Krishnan, L. (2019). *Gender and Newsroom Dynamics*. Sage Publications.
4. McQuail, D. (2010). *McQuail's Mass Communication Theory* (6th ed.). London: Sage Publications.
5. Mencher, M. (2011). *News Reporting and Writing* (11th ed.). New York: McGraw-Hill.
6. Rai, S. (2021). "Digital Media and Women's Voice in India", *Journal of Gender Studies*, 9(2), 45-53.
7. Rai, S. (2022). "Digital Media and Women's Representation", *Journal of Media and Gender Studies*, 8(1), 33-41.
8. Sharma, N. (2020). "Women Journalists in India: Challenges and Contributions", *Indian Media Studies Journal*, 6(1), 22–35.
9. Tong, R. (2009). *Feminist Thought: A More Comprehensive Introduction* (3rd ed.). Boulder: Westview Press.
10. कुमारी, एस. (2019). स्त्री विमर्श: एक पुनरावलोकन. पटना: नीलांबर पब्लिकेशन।
11. कुमारी, श. (2020). 'भारत में स्त्री पत्रकारिता की स्थिति', भारतीय मीडिया अध्ययन जर्नल, 12(3), 45-52.
12. प्रभाकर, ए. (2018). भारतीय पत्रकारिता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य. लखनऊ: भारत बुक डिपो।
13. बैनर्जी, प. (2021). स्त्री और मीडिया: एक विमर्श, दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
14. बैनर्जी, पी. (2017). 'मीडिया में स्त्री छवि' दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
15. शुक्ला, डी.(2020)'मीडिया, समाज और संस्कृति'भोपाल: लोकमित्र।